विनोद कुमार शुक्ल

हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़! (XII)

क्या उसने बोलकर सोचा था? अगर उसने बोलू से कहा था तो अब बोलू कहाँ है?

"बोलू तू चुप क्यों है?" भैरा ने भैरा की आवाज़ सुनी।

तब भैरा ने चिल्लाकर कहा, "बोलू भैरा मैं हूँ। तुम कहाँ हो? इतने में भैरा ने सुना भैरा की आवाज़ में, "बोलू लगता है छोटू भैरा की आवाज़ में बोल रहा है। हम लोगों को बुद्धू बना रहा है।" भैरा मुड़कर उस ओर बढ़ा जिधर से आवाज़ आई थी। पेड़ों के कारण वहाँ अँधेरा था। वह झाड़ियों को हटाता हुआ तेज़ जा रहा था। भैरा ने कहा, "नहीं बोलू मैं भैरा हूँ। और तुमको ढूँढ रहा हूँ। तुम मुझको दिख नहीं रह हो।" "तुम भैरा नहीं हो। भैरा मेरे साथ है। तुम झूठ बोल रहे हो। तुम जादूगर हो या छोटू?" बोलू की आवाज़ आई।

"नहीं बोलू मैं भैरा हूँ। तुम धोखा मत खाना। मैं स्कूल जा रहा हूँ। तुम सब लोगों को ढूँढ रहा था। जो भैरा तुम्हारे साथ है वह भैरा नहीं है। जादूगर है। मेरा भेष बनाकर तुम्हारे साथ है। या छोटू मेरी आवाज़ का भेष बना रहा है। तुम दोनों मुझे बुद्धू बना रहे हो।" भैरा ने कहा।

"धोखा तुम दे रहे हो। भैरा मेरे साथ है। तुम अपना असली नाम बताओ।" भैरा की आवाज़ थी।

"भैरा मेरा असली नाम है।" भैरा ने कहा।

अँधेरा जगह-जगह छुपा हुआ था। अँधेरा अचानक इस तरह पास आ जाता जैसे ताक में छुपा हुआ था। अँधेरा जहाँ था वहाँ सन्नाटा था। अँधेरे और सन्नाटे में दोस्ती थी। अँधेरे में कोई जाता नहीं इसलिए वहाँ सन्नाटा होता है।

बोलू को ढूँढने के चक्कर में भैरा उस ओर चला आया जिधर एक खतरनाक गड्ढा था। उसे याद आया, वह सम्भल गया। दो कदम बाद ही गड्ढा था। बहुत गहरा। उसमें गिर जाएँ तो ऊपर आना मुश्किल। भैरा के लिए तो बहुत कठिन। गड्ढे के तल में थोड़ा बरसात का पानी भरा था। पानी में चन्द्रमा की परछाँई थी। चन्द्रमा गड्ढे में गिरा हुआ दिख रहा था। देखकर लगता कि कैसे निकलेगा। गढ्ढा आए दिन गहरा होता जा रहा था। यह एक ऐसी जगह थी जहाँ मुरम थी। लोग मुरम खोद कर ले जाते। और खोदते हुए नीचे उतरने के लिए सीढ़ी बनाते जाते। पर सीढ़ी जगह-जगह टूट गई थी। नीचे उतरना और ऊपर चढ़ना कठिन हो गया था। भैरा खुद तो सम्भल गया पर अपने बिस्तर, दरी और चादर को सम्भाल नहीं पाया। हाथ से छूटकर बिस्तर गड्ढे में गिर गया। बिस्तर पानी तक नहीं पहुँच पाया था। खुरदुरी मुरम की दीवाल से लुढ़कते हुए पहले ही ठहर गया था। वह ज़ोर से चिल्लाया, "बोलू मेरा बिस्तर गड्ढे में गिर गया है। मेरी मदद करो। मैं गड्ढे में बिस्तर लेने उतर रहा हूँ।" अब उसका सारा ध्यान बिस्तर को पा लेने में था।

"भैरा गड्ढे में मत उतरना। हम लोग आ रहे हैं।" बोलू की आवाज़ थी।

"रुक जा भैरा मैं आ रही हूँ।" कूना की आवाज़ थी।

भैरा बहुत दिनों से अनसुना करना भूल रहा था। उसने अनसुना किया। उसने पहली सीढ़ी पर सम्भल कर पैर रखा। फिर दूसरी पर। गड्ढे के आसपास के बड़े पेड़ों की हिलती-डुलती अँधेरी छाया नीचे पड़ रही थी। इससे भ्रम होता था। यह भ्रम वैसा ही था जैसे पास और दूर के लेंस वाला चश्मा पहनकर नीचे देखते हुए उतरने से होता है।

बीनू की आवाज़ आई, "मैं छोटू बोल रहा हूँ। मैं भी हूँ।"

"तुम बीनू बोल रहे हो।" भैरा ने कहा। छोटू जो सबकी आवाज़ में बोल कर सबको उपस्थित करता था। अपने को 'छोटू' बोलकर उपस्थित नहीं करा पा रहा था। छोटू केवल दिखकर अपने को उपस्थित करा पाता था।

"मैं छोटू बोल रहा हूँ और अकेला हूँ।" बोलू की आवाज़ में उसने कहा।

"तुम बोलू बोल रहे हो।" भैरा ने कहा।

"सच में मैं छोटू बोल रहा हूँ। कसम से।" कूना की आवाज़ पास से आई। कूना की आवाज़ में, "बोल रहा हूँ क्यों है, बोल रही हूँ क्यों नहीं है?" शरारत छोटू कर रहा है या कूना कर रही है। भैरा ने सिर उठा कर देखा। छोटू जैसा लड़का खड़ा था। नीचे झाँक रहा था।

तीन सीढ़ी वह उतर चुका था। चौथी सीढ़ी पर पैर रखते समय उसका पैर सीढ़ी के कोने पर पड़ा। कोना टूट गया और वह गड्ढे में गिर गया। उसे अधिक चोट नहीं लगी थी, दोनों हथेलियाँ छिल गई थीं। भैरा का मन रोने को हुआ। पर रोया नहीं। पानी में गिरने से वह बच गया था। उसने वहाँ चन्द्रमा को देखा। गड्ढे में उसका अकेलापन कुछ कम हुआ। तभी एक बादल का टुकड़ा आया और चन्द्रमा को छुपा लिया। गड्ढे के पानी में सफेद बादल की परत अँधेरे की

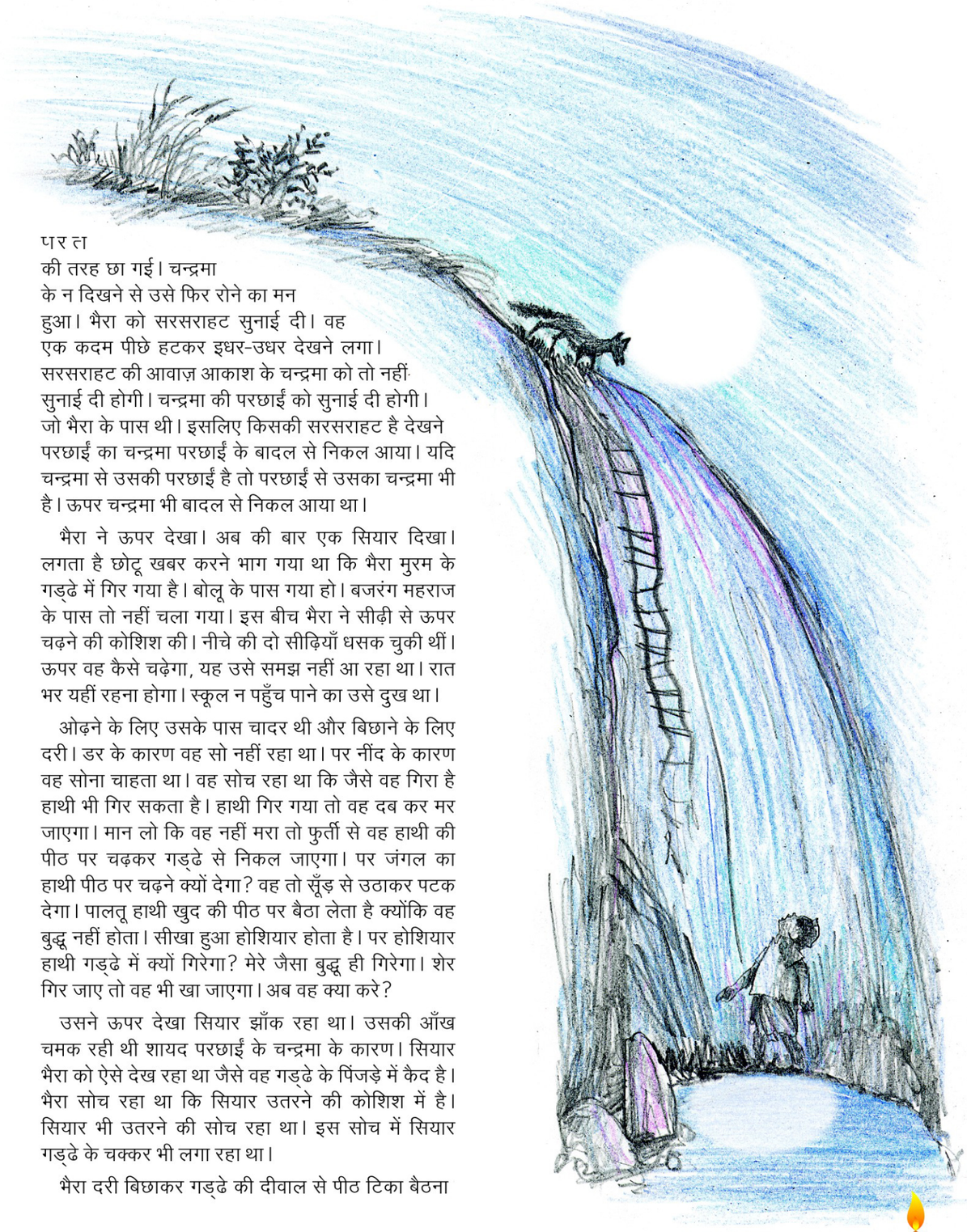

परत की तरह छा गई। चन्द्रमा के न दिखने से उसे फिर रोने का मन हुआ। भैरा को सरसराहट सुनाई दी। वह एक कदम पीछे हटकर इधर-उधर देखने लगा। सरसराहट की आवाज़ आकाश के चन्द्रमा को तो नहीं सुनाई दी होगी। चन्द्रमा की परछाईं को सुनाई दी होगी। जो भैरा के पास थी। इसलिए किसकी सरसराहट है देखने परछाईं का चन्द्रमा परछाईं के बादल से निकल आया। यदि चन्द्रमा से उसकी परछाईं है तो परछाईं से उसका चन्द्रमा भी है। ऊपर चन्द्रमा भी बादल से निकल आया था।

भैरा ने ऊपर देखा। अब की बार एक सियार दिखा। लगता है छोटू खबर करने भाग गया था कि भैरा मुरम के गड्ढे में गिर गया है। बोलू के पास गया हो। बजरंग महराज के पास तो नहीं चला गया। इस बीच भैरा ने सीढ़ी से ऊपर चढ़ने की कोशिश की। नीचे की दो सीढ़ियाँ धसक चुकी थीं। ऊपर वह कैसे चढ़ेगा, यह उसे समझ नहीं आ रहा था। रात भर यहीं रहना होगा। स्कूल न पहुँच पाने का उसे दुख था।

ओढ़ने के लिए उसके पास चादर थी और बिछाने के लिए दरी। डर के कारण वह सो नहीं रहा था। पर नींद के कारण वह सोना चाहता था। वह सोच रहा था कि जैसे वह गिरा है हाथी भी गिर सकता है। हाथी गिर गया तो वह दब कर मर जाएगा। मान लो कि वह नहीं मरा तो फुर्ती से वह हाथी की पीठ पर चढ़कर गड्ढे से निकल जाएगा। पर जंगल का हाथी पीठ पर चढ़ने क्यों देगा? वह तो सूँड़ से उठाकर पटक देगा। पालतू हाथी खुद की पीठ पर बैठा लेता है क्योंकि वह बुद्धू नहीं होता। सीखा हुआ होशियार होता है। पर होशियार हाथी गड्ढे में क्यों गिरेगा? मेरे जैसा बुद्धू ही गिरेगा। शेर गिर जाए तो वह भी खा जाएगा। अब वह क्या करे?

उसने ऊपर देखा सियार झाँक रहा था। उसकी आँख चमक रही थी शायद परछाईं के चन्द्रमा के कारण। सियार भैरा को ऐसे देख रहा था जैसे वह गड्ढे के पिंजड़े में कैद है। भैरा सोच रहा था कि सियार उतरने की कोशिश में है। सियार भी उतरने की सोच रहा था। इस सोच में सियार गड्ढे के चक्कर भी लगा रहा था।

भैरा दरी बिछाकर गड्ढे की दीवाल से पीठ टिका बैठना

चाहता था। चादर निकालकर उसने ओढ़ ली थी। मच्छर काट रहे थे और हल्की-सी ठण्ड भी लग रही थी। कुछ पत्थर पड़े थे। अपने बचाव के लिए उसने उन्हें इकट्ठा करना शुरू किया। एक बड़ा पत्थर उठाया तो उसके नीचे से तीन बिच्छू निकले। इधर-उधर भाग कर वे छुप गए। भैरा ने न मालूम कितने पत्थर उठाकर देखे होंगे परन्तु पहली बार उसे बिच्छू मिले।

तभी शेर के दहाड़ने की आवाज़ आई। आवाज़ इतनी पास से और ज़ोर से आई थी कि मुरम की दीवाल से चिपके हुए मुरम के कुछ कंकड़ झरे। और लुढ़कते हुए पानी में डूब गए। सियार के भागने की आवाज़ आई थी। हो सकता है कि बजरंग महराज ने बोला हो और सुनकर शेर दहाड़ा हो। हो सकता है कि बजरंग महाराज ने "भैरा" पुकारा हो इसलिए दहाड़कर शेर ने "भैरा" कहा हो। यदि वह "पिताजी" कह कर जवाब दे तो क्या शेर भी "पिताजी" दहाड़ेगा। "पिताजी" भैरा चिल्लाया। तभी बिलकुल पास से शेर के बच्चे के दहाड़ने की आवाज़ आई। और गड्ढे की दीवाल से एक मुरम का टुकड़ा झर कर लुढ़कता हुआ पानी में गिरा।

भैरा गड्ढे में गिर गया है यह बताने छोटू पहले बस्ती में गया। वह भूल गया था कि बस्ती में लोग नहीं मिलेंगे। बस्ती सुनसान थी। वह स्कूल की और दौड़ा। रास्ते में उसे टॉर्च लिए बजरंग होटल का भजिया बनाने वाला मिला। वह बहुत तेज़ी से जा रहा था। छोटू ने उसे रोका, "भैरा मुरम के गड्ढे में गिर गया है।" छोटू हाँफ रहा था। परन्तु जो आवाज़ थी वह भैरा की थी। भजिया बनाने वाला किसी के भी रोकने से रुकने वाला नहीं था। शायद बजरंग महराज ने कहा हो सीधे जाना, कहीं रुकना नहीं। परन्तु भैरा की आवाज़ सुन रुक गया। उसके मुँह में निकला "भैरा"। उसने ध्यान से छोटू को देखा कि भैरा है? छोटू-छोटू था, भैरा तो नहीं था। उसे लगा भैरा कि चिन्ता में उसे भैरा की आवाज़ सुनाई दी। "मुझे मालूम है।" कह कर वह भागने जैसा चल पड़ा। "तुम को कैसे मालूम हुआ?" बोलू की आवाज़ में छोटू ने कहा। अब कौन बोला? "कौन है भाई?" वह मुड़ा। उसे वही लड़का दिखा जिसने उसे भैरा की आवाज़ में रोका था। वह बताना नहीं चाहता था। परन्तु वह आश्चर्य की स्थिति में था। इसी स्थिति के कारण उसके मुँह से निकला, "बजरंग महाराज ने बताया।" फिर वह इस तरह मुड़ा कि बेकार रुक गया था। वह दौड़ पड़ा। उसने एक बच्ची को सुना, "बजरंग महाराज को कैसे पता चला।" यह कूना की आवाज़ थी। वह कूना का नहीं जानता था। ये बच्ची कहाँ से आ गई? वह पलटा तो उसने उसी लड़के को देखा। उसने छोटू के चेहरे पर टॉर्च का उजाला फेंका। एक प्यारा-सा लड़का दिखा। टॉर्च के प्रकाश से छोटू की आँखें मिचमिचा गईं। वह गुस्सा हुआ। उसने बजरंग महराज की आवाज़ में कहा, "यह सब क्या है? भैरा के पास जाओ।" उसी समय शेर दहाड़ने लगे। शेर बिलकुल पास दहाड़ रहे थे। भजिया बनाने वाला शेर की आवाज़ सुन किसी सुरक्षित जगह चला जाता परन्तु बजरंग महराज के कहे अनुसार वह मुरम-खदान की तरफ ही दौड़ा। जब वह दौड़ रहा था तो टॉर्च थरथरा रही थी। थरथराती रोशनी जिस पर जितनी देर पड़ती वह उतनी देर थरथराते हुए दिखती। चाहे वह चट्टान हो, पेड़ हों, बस्ती के कुछ दूर झोपड़ी हो, धरती हो। आकाश तक यदि टॉर्च का प्रकाश जाता तो आकाश भी थरथराते हुए दिखता।

जारी...